The Opinion, Vol. 5, No. 10, July-December, 2016 **ISSN : 2277-9124**

दलित आन्दोलन एवं डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर

डॉ0 मोहित*

इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में 'दलित–समस्या' विद्यमान थी जो आज के आयुनिक, वैज्ञानिक भारत में भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है। जिसके कारण आज भी दलितों के 'आत्म–सम्मान' एवं 'सामाजिक प्रस्थिति' को ठेस पहुँचाती है। दलितों के सामाजिक शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सॉस्कृतिक उत्थान हेतु दलित आन्दोलनों का जन्म हुआ। जो मूलरूप से बाबा साहब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के शैक्षणिक जीवन से प्रारम्भ होकर स्वतंत्र भारत के बाद तक चली।

दलित समस्या 'जाति–व्यवस्था' की देन है जिसका जन्म मूलतः 'वर्ण–व्यवस्था' से हुआ। वर्ण–व्यवस्था जो मूलरूप से 'ईश्वरीय देन' (Good made system) मानी जाती है परन्तु वास्तविक रूप में 'मानव निर्मित' व्यवस्था (Man made system) थी। जिसके अन्तर्गत 'शूद्र–वर्ण को सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों से वंचित किया गया था। उन्हें केवल तीनों वर्णों–ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य की सेवा करने का अधिकार प्राप्त था। फिर भी उस समय समाज में सामंजस्य एवं समरसता विद्यमान थी। लेकिन वर्ण व्यवस्था के उपरान्त जब जाति व्यवस्था अपने चरमोत्मर्ष पर पहुँची तो, दलितों का सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं साँस्कृतिक जीवन अति दयनीय हो गया। दलितों का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक शोषण का युग प्रारम्भ हुआ। इसी समस्या से निजात दिलाने के लिए दलित आन्दोलनों का जन्म हुआ।

यद्यपि भारत में जाति व्यवस्था का इतिहास जितना पुराना है उससे कम पुराना इतिहास 'जाति विहीन' समाज की स्थापना के प्रयासों का भी है। ईसा से सदियों पूर्व भगवान महावीर ने जाति–व्यवस्था का विरोध किया। भगवान बुद्ध ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व जन्म व जाति पर आधारित सामाजिक भेद–भाव के विरूद्ध अहिंसात्मक क्रान्ति के संघर्ष का आह्वान किया। उन्होंने ईश्वर, आत्मा, कर्म व पुनर्जन्म पर आधारित हिन्दू सामाजिक दर्शन को पूर्णतः नकार दिया।[1] भगवान बुद्ध के समाजिक दर्शन का आधार सामाजिक समानता और स्वतंत्रता थी।

दलित आन्दोलनों का आरम्भिक रूप मुख्य से सामाजिक एवं धार्मिक था। क्योंकि हिन्दू धर्म में धार्मिक कट्टरता, कर्मकाण्ड एवं पाखण्ड अपने चरम पर था जो अनेक सामाजिक कुरीतियों, बुराईयों एंव अन्धविश्वासों को बढ़ावा दे रहा था। इस अन्धकार से दलित समाज को उबारने के लिए समाज में 'भक्ति आन्दोलनों' का उद्भव हुआ। जिसकी जड़े एक शताब्दी ईसा पूर्व में देखी जा सकती है। ग्यारहवीं सदी के आचार्य रामानुज जिनके कई अछूत शिष्य भी थे और जिन्होंने अछूतों के लिए मठों एवं मन्दिरों के द्वार खोले, से लेकर रामानन्द, कबीर, गुरूनानक, चोखामेला, सन्त रविदास, नामदेव चैतन्य, तुकाराम तथा परमहंस के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किन्तु सामाजिक आन्दोलन के रूप में भक्ति आन्दोलन की कुछ सीमाएं भी रही है। डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार– ''भक्ति समर्पण की प्रवृत्ति को

* **असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल), गोरखपुर**

बढ़ावा देती है यह असहायन की अफीम है। इसने दलितों की नसों को कमजोर किया और उसमें अधीनता की भावना विकसित की।''[2]

राजाराम मोहन राय ने 20 अगस्त 1828 को ब्रह्म समाज की स्थापना की और उन्होंने जाति–प्रथा, अस्पृश्यता एवं अन्य सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए संघर्ष का आह्वान किया। देवेन्द्र नाथ टैगोर, केशवचन्द सेन ने उनके इस सामाजिक कार्य को आगे बढ़ाया। एम0जी0 रानाडे के नेतृत्व में प्रार्थना समाज की स्थापना सन् 1867 में हुई। उन्होंने अपने जीवन काल में ब्रह्म समाज की सामाजिक समानता की धारणा और जाति विरोधी आन्दोलन को सशक्त व व्यापक बनाने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज, जिसकी स्थापना सन् 1975 में हुई, ने सामाजिक छूआछूत का विरोध किया और शुद्धि के माध्यम से अस्पृश्यों के लिए जो पूर्व में मुसलमान व ईसाई बन गये थे, उन्हें हिन्दू धर्म में लौटने का द्वार खोला। उन्होंने दलितों को जनेऊ पहनने, मंत्रोधारण करने तथा वेद पढ़ने की स्वतंत्रता प्रदान कर सामाजिक हीनता से मुक्ति दिलाने में उल्लेखनीय कार्य किया।

महाराष्ट्र में ज्योतिबा फूले ने सत्यशोधक समाज (1873) की स्थापना की। जो जातीय भेदभाव एवं ब्राह्मण प्रभुता की खुली चुनौती थी। अनेक विरोधों के बावजूद उन्होंने पूना में अछूतों के लिए सर्वप्रथम विद्यालय (1843) की स्थापना की। मैसूर में वोक्कालिंगा और लिंगायत संगठित हुए। जिनकी देखादेखी अछूत भी अपनी मुक्ति के लिए एकजुट होने लगे। बीसवीं सदी के आरम्भ में श्री नारायण गुरू स्वामी ने दलितों की मुक्ति हेतु 'एक जाति के सिद्धान्त'' पर आधारित हिन्दू धर्म के समानान्तर एक नये धर्म जो साधारणतः उनके नाम से जाना जाता है की स्थापना की। बीसवीं सदी के दूसरे दशक तक राष्ट्रीय आन्दोलन का अभिन्न अंग बना दिया। गाँधी जी ने अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म का एक काला धब्बा निरूपित किया। उनका कहना था कि– ''यदि अस्पृश्यता रहती है तो हिन्दू धर्म मिट जायेगा। हिन्दू धर्म को यदि जीवित रखना है तो अस्पृश्यता केा मिटाना होगा। अस्पृश्यता रहे इससे अच्छा है कि हिन्दू धर्म मिट जाय''।[3]

डॉ0 अम्बेडकर का दलित संघर्ष

डॉ0 अम्बेडकर सवर्णों के हृदय परिवर्तन व सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमों पर भरोसा नहीं करते थे और न ही वे लम्बे समय तक इन्तजार करने के पक्ष में ही थे। उनका कहना है कि– 'सामाजिक स्वतंत्रता और समानता के खोये हुए अधिकार याचना से नहीं, कठिन संघर्ष से प्राप्त होते हैं।''[4] इसी सामाजिक एवं मानसिक सोच को साकार करने के लिए उन्होंने 20 मार्च 1927 को चौदार ताल से पानी लेने के लिए सत्याग्रह का नेतृत्व किया। 24 सितम्बर 1927 को ब्राह्मण विशेषाधिकार व जॉत–पॉत के विरोध स्वरूप मनुस्मृति जलाई। सार्वजनिक मन्दिरों में अस्पृश्यों केा समान अधिकार प्रदान किये जाने के उद्देश्य से डॉ0 अम्बेडकर ने अमरावती में अम्बा देवी मन्दिर में प्रवेश (1927), ठाकुरद्वारा मन्दिर में प्रवेश (1927), बम्बई में गणपति प्रांगण में प्रवेश (1927) तथा नासिक में कालाराम मन्दिर में प्रवेश (1930) हेतु दलितों को संगठित किया।

दलितों के आन्दोलन की सक्रिय करने के उद्देश्य में डॉ0 अम्बेडर ने 'मूक नायक' (1920) तथा 'बहिष्कृत भारत' (1927) पाक्षिकों के प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जो यह सिद्ध करता है कि डॉ0 अम्बेडकर पूर्णतः अछतोद्वार आन्दोलन से जुड़ गये थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि– ''अछूत

समाज की प्रगति मे बाधक बनने वाला कोई भी व्यक्ति या संस्था हो, वह चाहे अछूत समाज की हो, अथवा सवर्ण हिन्दू की, उसका हमें तीव्र विरोध तथा निषेध करना चाहिए।''

दलितों के हितों की रक्षा के लिए ही बाबा साहब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर ने 20 जुलाई 1924 को ''बहिष्कृत हितकारणी सभा'' की स्थापना की। जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्न है।[5]

1. दलित–वर्ग में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करना, छात्रावास आदि की स्थापना करना और उन साधनों का विकास करना जो उनके उत्थान के लिए समयानुसार आवश्यक हो।
2. दलित–वर्ग की बस्तियों में वाचनालय, क्रीड़ाकेन्द्र और विद्याकेन्द्र स्थापित करके संस्कृतिक का प्रसार करना।
3. औद्योगिक तथा कृषि विद्यालय खोलकर दलित–वर्ग की आर्थिक उन्नति के प्रयास करना।
4. दलित–वर्गों की विभिन्न कठिनाइयों का प्रतिनिधित्व एवं निवारण करना।
5. अछूतोंद्वार आन्दोलन को आगे बढ़ाना।

अछूतोद्वारा आन्दोलन के दौरान डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर मद्रास, मध्यप्रेदश, मालाबार कई स्थानों पर गये और उन्होंने अछूतों की दशा एवं दुर्दशा का अपनी नंगी ऑखों से अवलोकन किया, तो उनका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने दलितों को शिक्षित होने, दलित स्त्रियों को पूरा अंग वस्त्र पहने एवं दलित पुरूषों को शराब पीने की मनाही की एवं उन्हें सम्मानजनक जिन्दगी जीने की सलाह दी। दलित दुखः निवृत्ति का आहवान् करते हुए डॉ0 अम्बेडकर ने कहा कि –

''धन्य हैं वे पुरूष जो उन लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के कर्तव्य के प्रति सचेत है। जिनमें वे पैदा हुए। सौभाग्यशाली हैं वे पुरूष जो अपने दिनों को पुण्यों एवं रातों को दासता के प्रति विद्रोह के आन्दोलन की प्रगति में न्यौछावर करते है। धन्य है वे लोग जो यह प्रतिज्ञा करते हैं कि वे उन समय तक दम नहीं लेंगे, जब तक अछूत मानवता को प्राप्त नहीं कर लें,भले ही मार्ग में अच्छाई, बुराई, धूप, पूर्णतः तूफान, सम्मान, अनादर आदि आये।''[6]

दलितों, शोषितों, कमजोर एवं पिछड़े वर्गों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के लिए बाबा साहब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर ने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित आन्दोलनों के लिए समर्पित ही नहीं किया, बल्कि स्वंतत्र भारत में संविधान के द्वारा उन्हें संवैधानिक एंव कानूनी अधिकारों को प्रदान किये। जिसके कारण उनकी ख्याति भारतीय समाज में 'दलित मसीहा' के रूप में विश्वविख्यात हैं इसलिए दलित समाज आदर एवं सहृदयता से पूजता भी है। आधुनिक भारत में दलितोंत्थान के लिए उन्होंने तीन मूलमंत्र दिये है–

1. ''शिक्षित बनो'' !
2. ''संगठित हों'' !
3. ''संघर्ष करो'' !

जिसके फलस्वरूप दलित समाज आज वैश्विक भारत में सशक्त (Empower) ही नहीं हो रहा है, बल्कि अनेक उच्च प्रशासनिक एवं राजनैतिक पदों पर विराजमान होते हुए 'भारत के भाग्य'का निर्माण भी कर रहा है जिसके कारण भारत, 'विकसित भारत' की ओर विकासोन्मुख भी हो रहा है। जो वैश्विक भारत के लिए एक शुभ संकेत है।

संदर्भ :

1. अम्बेडकर, 1970 : 193–212 : 267–81
2. कीर, धनन्जय, 1981, डॉ0 अम्बेडकर, लाईफ एण्ड सिमशन, बाम्बे पापुलर, प्रकाशन
3. रदर मुण्ड इन्दिरा : 1979 – महात्मा गांधी, हरिजन, गांधी मार्ग–15–262–69
4. कीर, धनन्जय, 1981–82, डॉ0 अम्बेडकर, लाईफ एण्ड मिशन, बाम्बे पापुलर, प्रकाशन
5. हर्ष, हरदान, डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर, जीवन एवं दर्शन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ–18
6. हर्ष, हरदान, डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर, जीवन एवं दर्शन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ–21

●